ऋषभायन

भारतीय संस्कृति के पुरोधा

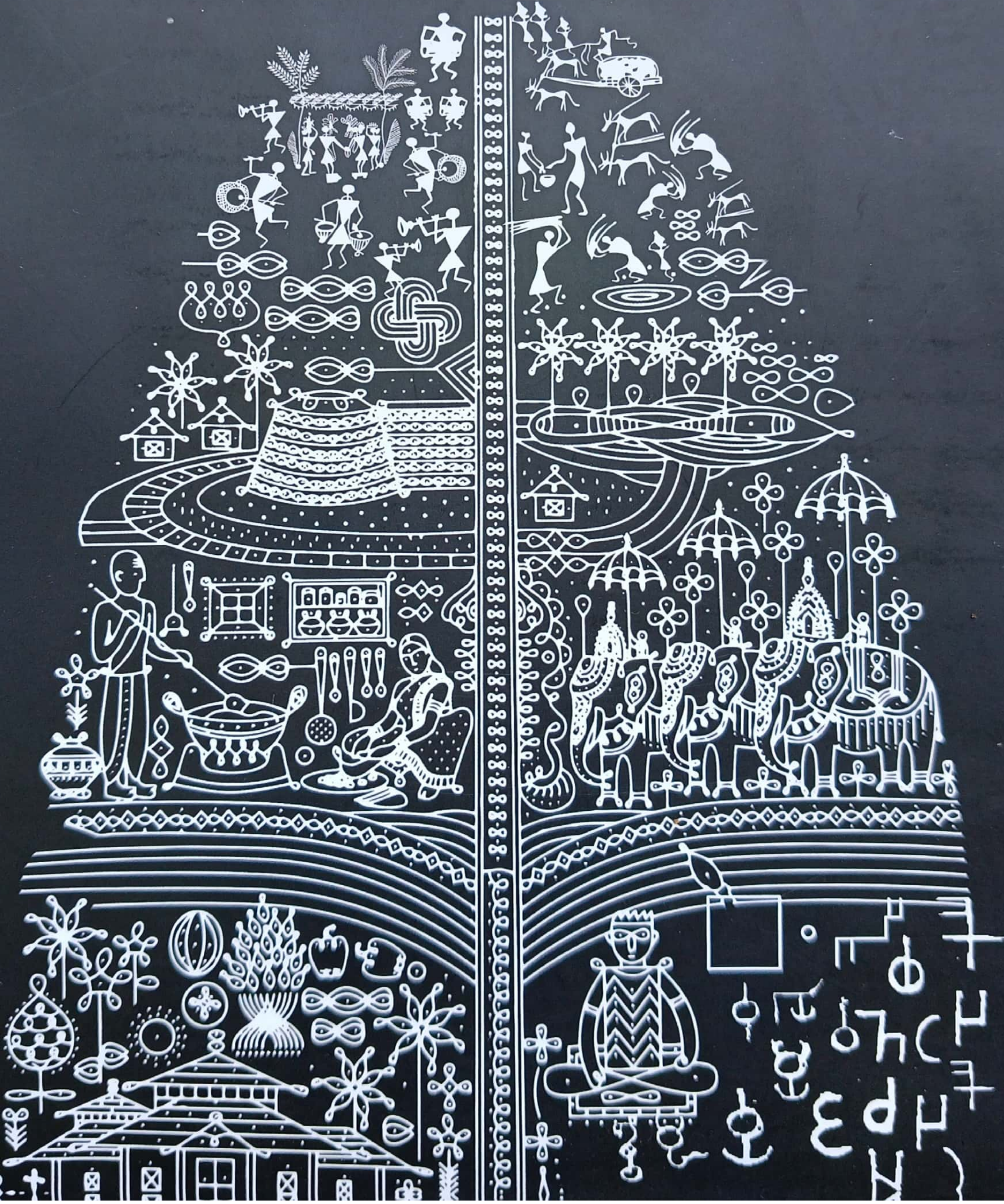

Scanned by CamScanner

RUSHABHAYAN

(THE PIONEER OF INDIC CIVILIZATION)

Edition : 1st Copy : 2000 Price : 999/-

Publication Day: September 28, 2025
Acharya Bhagwant Pu. Yashovarmasuriji M.S.'s
Gachhadhipati Muhurat Proclamation Day

Inspired by : Labdhi-Vikramguru Pattaratna Shradheya Gurudev
Jainacharya Yashovarmasurishwarji M.S. and
Jainacharya Bhagyayashsuri M.S.

ISBN : 978-93-48101-77-8

Available at :

Shri Aatma-Kamal-Labdhisurishwarji Jain Gyana Mandir - Dadar
6-Gayanmandir Road, Dadar (W), Mumbai.
9224146603 - Atulbhai
9920244534 - Mayurbhai

Shree Mumbai Jain Yuvak Sangh
105, 1st Floor, Roopraj Building,
497, S.V.P. Road,
Mambai - 400 004.

Ritenbhai H. Shah
203/4, Bulding No. 8, Ishita Park Society,
B/h. Sanghvi Tower, Adajan, Surat-395009
(M.) 93740 4004

Arham Jain Upkaran Bhandar
Shop No. 4, Western Arena Complex,
Opp. Siddhsangini Upashraya,
Jain Circle, Pal, Surat.
Harshilbhai Parmar (M.) 93767 31555

Manish B. Punamiya
504/3, Mahajan General Clinics,
Nr. B.B.C. Market, Panchkuwa Cloth Market,
Kalupur, Ahmedabad.
(M.) 70165 72967

Nandan Nahar
S.R. Papers Pvt. Ltd.
36 Maddox Street, Choolai,
Chennai-600112. Ph. 044-42067779

Kanchangiri-Prabhagiri dhar
99 Divasnu Derasar, Opp. Keshariyaji,
Taleti Road, Palitana.
Bipinbhai (M.) 93285 13425

Gyan ni Baari
G-1, Labh Complex, Sattar Taluka Society,
Nr. C. U. Shah College
Incometax, Ahmedabad.
(M.) 9408371206

Printed by : Kirit Graphics, Ahmedabad. (M.) 98984 90091, 94093 42601

Scanned by CamScanner

Rushabhayan

The Pioneer of Indic Civilization

: Inspiration :

Labdhi-Vikramguru Pattaratna Shraddheya Gurudev
Jainacharya Yashovarmasurishwarji M.S.
Jainacharya Bhagyayashsuri M.S.

: Editor :

Sejal Shah

: Publisher :

Shri Labdhi-Vikram Jan Seva Trust (LVJST)

Scanned by CamScanner

32. Yoga and Rishabhadeva	Dhruti Ghiya Rathi	215
33. ભારતીય સંસ્કૃતિમાં પ્રથમ તીર્થંકર ઋષભદેવનું યોગદાન	ડૉ. વૈશાલી શાહ	228
34. प्रथम योगीश्वर - तीर्थंकर आदिनाथ ऋषभदेव	डॉ. अरिहन्त कुमार जैन	238
35. योग और भगवान ऋषभदेव	रवीन्द्र	246
36. ઋષભનો વંશ રયણાયરૂ રે..	ડૉ. અભય દોશી	252
37. આદિ તીર્થંકર શ્રી ઋષભદેવ પ્રભુના પૂર્વભવો	જેપલ બીજલ શાહ	259
38. प्रभु श्री ऋषभदेव भगवान की प्राचीन विचरण भूमियां और उनके वर्तमान स्थान	अर्पित शाह	270
39. ભગવાન ઋષભદેવચરિત્રને આલેખતી ચિત્રાવલિ	માલતી શાહ	285
40. The Silent Architect of Ages : Ādināthah in Jinsen's Canon and Pampa's Poetry	Dr. Intaj Malek	295
41. Ancient pratimās of Jina Ṛṣabhadeva in Museums, Galleries, and Private Collections with Special Reference to Iconography from Eastern India	Arpit Shah	307
42. The Ancient Images, Shrines and Life incidences of Bhagavan Rishabhadeva	Dr. Renuka Porwal	328
43. ગુજરાતની ધાતુ પ્રતિમાઓ (ઈ.સ. 1લી થી 10મી સદી)	ડૉ. વિજય યાદવ	336
44. Iconographic Distinctiveness and Sacred Veneration : Exploring Some of the Ancient Pratimās of Jina Śrī Ṛṣabhadeva Across India	Arpit Shah	341
45. ભગવાન ઋષભદેવપ્રભુનાજીવન અંગે સાહિત્ય	જૈનાચાર્ય શ્રી વિજય મુનિચન્દ્રસૂરિજી મ.સા.	360
46. લાલભાઈ દલપતભાઈ સંગ્રહાલયની સામગ્રીમાં ભગવાન આદિનાથ...	હીરેન દોશી	364
47. शिलालेखों में भगवान माणिक्यस्वामी	ऋषभ भंडारी	368
48. जैन कला - साहित्य	जैन उपा. श्री विश्रुतयशविजयजी म.सा.	372
49. ઋષભાયન મહાભિનિષ્ક્રમણોની મહાગાથા	ડૉ. કુમારપાળ દેસાઈ	374

Scanned by CamScanner

प्रथम योगीश्वर – तीर्थंकर आदिनाथ ऋषभदेव

-- डॉ. अरिहन्त कुमार जैन

सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर (म.प्र.) में विराजमान तीर्थंकर आदिनाथ की प्राचीनतम प्रतिमा

Scanned by CamScanner

भारतीय संस्कृति के इतिहास में तीर्थंकर ऋषभदेव आदिनाथ ही एक ऐसे आराध्यदेव हैं, जिसे वैदिक संस्कृति तथा श्रमण संस्कृति में समान महत्त्व प्राप्त है। जैन परंपरा में आज के उपलब्ध साहित्य, परम्परा और साक्ष्यों के आधार पर भगवान ऋषभदेव प्रथम योगीश्वर के रूप में योगविद्या के आदि प्रवर्तक माने जाते हैं (आत्मारामजी, 1983)।

उसहो जोगो उत्तं, पढमो करीअ आसणतवझाणं। लहीअ सुद्धाप्पं य, अप्पा मे संवरो जोगो।।

अर्थात् प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने सर्वप्रथम योग विद्या का उपदेश दिया। उन्होंने सर्वप्रथम आसन, तप, ध्यान किया और शुद्ध आत्मा को प्राप्त किया और उपदेश दिया कि आत्मा ही संवर और योग है।

'योग' सम्पूर्ण विश्व को भारतीय संस्कृति की एक विशिष्ट और मौलिक देन है। भारत में ही विकसित लगभग सभी धर्म-दर्शन अपने प्रायोगिक रूप में किसी न किसी रूप में योग साधना से समाहित हैं तथा वे सभी इसकी आध्यात्मिक, दार्शनिक, सैद्धान्तिक और प्रायोगिक व्याख्या भी करते हैं। अलग अलग परम्पराओं ने अलग अलग नामों से योग साधना को भले ही विकसित किया हो, किन्तु सभी का मूल उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति पूर्वक शाश्वत सुखरूप मोक्ष की प्राप्ति ही है। अतः उद्देश्य की दृष्टि से प्रायः सभी परम्पराएँ एक हैं। योग के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर विचार करने पर इतना ही कहा जा सकता है कि आत्मविकास हेतु आध्यात्मिक साधना के रूप में 'योग' का प्रचलन प्रागैतिहासिक काल से चला आ रहा है (अरुणा, 2002)। जैन आगम ग्रन्थों के अनुसार भगवान ऋषभदेव इस अवसर्पिणी युग के प्रथम योगी व योगविद्या के प्रथम उपदेष्टा थे। उन्होंने सांसारिक (भौतिक) वासनाओं से व्याकुल, धन-सत्ता और शक्ति की प्रतिस्पर्धा में अकुलाते अपने पुत्रों को सर्वप्रथम 'सम्बोधि' [1]योग का प्रारम्भ (ज्ञानपूर्ण समाधि) का मार्ग बताया, जिसे आज की भाषा में 'योगमार्ग' कह सकते हैं।

ऋषभदेव ने पाषाणकालीन प्रकृति पर आधारित असभ्य युग का अंत करके ज्ञान-विज्ञान संयुक्त कर्म प्रधान मानवी सभ्यता को भूतल पर सर्वप्रथम ॐ नमः (प्रारम्भ) किया। भगवान ऋषभदेव का सबसे बड़ा योगदान यही है कि एक राजा के रूप में उन्होंने मनुष्यों को कर्म करना सिखाया, कई कलायें सिखायीं तथा एक तपस्वी के रूप में उन्हें मुक्ति का मार्ग भी बताया। वे कहते थे - 'कृषि करो और ऋषि बनो'। उन्होंने असि, मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य और विद्यारूप लौकिक षट्कर्मों का तथा देवपूजा, गुरुभक्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान रूप धार्मिक षटकर्मों का उपदेश दिया। राज्यव्यवस्था की, समाजसंगठन किया और मानवसभ्यता के विकास के बीज बोये। उन्हीं से भारतीय क्षत्रियों के प्राचीनतम इक्ष्वाकुवंश का प्रारंभ हुआ। राजकाज के साथ उद्योग, सहयोग और योग की संगति बिठाने के कारण ऋषभदेव का इतिहास में प्रथम राजा, प्रथम मुनि, प्रथम केवली, प्रथम तीर्थंकर और प्रथम धर्म चक्रवर्ती के रूप में स्थान है[2]। लोक को लौकिक एवं पारलौकिक उपदेश देकर उन्होंने निःस्पृह, निरीह, योगमार्ग अपनाया और कैलास पर्वत से निर्वाण प्राप्त किया (जैन, 2022)।

---

1. सूत्रकृतांग 1/2/1/1
2. 'अरहा कोसलिए पढमराया पढमजिणे, पढम केवलि, पढमतित्थयरे, पढमधम्मवर चक्कवट्टी समुपज्झित्थे' - जम्बूदीप प्रज्ञप्ति 2/30

Scanned by CamScanner

योग के आद्य प्रणेता :

श्रीमद्भागवत में प्रथम योगीश्वर के रूप में भगवान ऋषभदेव का स्मरण किया गया है। वहाँ बताया है - भगवान् ऋषभदेव स्वयं नानाप्रकार की योगचर्याओं का आचरण करते थे। महाभारतकार ने योगविद्या के प्रारम्भकर्ता हिरण्यगर्भ को माना है[3]। साथ ही यह भी कहा है कि योगविद्या से पुरातन कोई विद्या तथा दर्शन नहीं है और हिरण्यगर्भ ही सबसे प्राचीन हैं (आत्मारामजी, 1983)।

महापुराण में कहा गया है कि ऋषभदेव के अनेक नामों में एक हिरण्यगर्भ था।" जैसा कि महाकवि पुष्पदंत ने कहा है -

सैषा हिरण्मयी वृष्टिः धनेशेन निपातिता।
विभोर्हिरण्यगर्भत्वमिव बोधयितुं जगत् ॥ **- महापुराण 12/65**

अर्थात् जब भगवान ऋषभदेव गर्भ में आये तो धनपति कुबेर ने माता-पिता का भवन हिरण्य की वृष्टि करके भर दिया अतः वे (ऋषभदेव) जगत में हिरण्यगर्भ के नाम से प्रख्यात हुए। वैदिक पुराणों के अनुसार भगवान ऋषभदेव भगवान विष्णु के पांचवें परन्तु प्रथम मानव अवतार थे (श्रीमद्भागवतपुराण 5/3/20)। श्रीमद्भागवत में एक स्थल पर "भगवान ऋषभदेवो योगीश्वरः (5/4/3) कहकर भगवान ऋषभदेव की प्रथम योगीश्वर के रूप में स्तुति की गई है और अन्यत्र हिरण्यगर्भ को योगविद्या का आद्य प्रवर्तक कहा है[4]।" जैन वाङ्मय में भी भगवान ऋषभदेव की हिरण्यगर्भ के रूप में स्तुति की गई है[5]। उक्त विचारों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिरण्यगर्भ और ऋषभदेव दोनों एक ही व्यक्ति के दो नाम हैं जो योग के आद्य प्रवर्तक थे (अरुणा, 2002)। इस प्रकार योग, योगी और योग-प्रक्रियाएँ सुदीर्घकाल तक चलती रहीं। किन्तु एक विशेष बात यह हुई कि कालप्रवाह से 'योग' अनेक प्रकार की विद्याओं, विशेषकर आध्यात्मिक विद्याओं और मोक्षप्राप्ति के उपायों में प्रयुक्त होने लगा। अनेक प्रकार के योग प्रचलित हो गये; यथा-ईश्वरभक्तियोग, तन्त्रयोग, राजयोग, ज्ञानयोग आदि-आदि (आत्मारामजी, 1983)।

प्राचीन सभ्यता और पुरातात्त्विक साक्ष्य :

सिन्धु घाटी की सभ्यता के अवशेषों से प्राप्त ध्यानस्थ योगी का चित्र उक्त तथ्य का पोषक प्रमाण है। यहाँ से प्राप्त ध्यानस्थ योगी की नग्नावस्था और कायोत्सर्ग मुद्रा (पद्मासन) में प्राप्त मूर्ति के आधार पर श्री रामचन्द्र दीक्षितार ने ई. सन् 3000 वर्ष पूर्व तथा उससे भी प्राचीन भारतवर्ष में प्रचलित योग-साधना को पाशुपत योग-साधना का प्रारम्भिक रूप माना है। उपर्युक्त चूंकि पद्मासन में उत्कीर्ण है, इसलिए कुछ विद्वान हठयोग का प्रारम्भ भी प्रागैतिहासिक काल से ही स्वीकार करते हैं[6]। प्रसिद्ध योगशास्त्र ग्रन्थ हठयोग प्रदीपिका में मंगलाचरण करते हुए लेखक ने भगवान आदिनाथ की स्तुति की है -

---

3. हिरण्यगर्भः योगस्य वक्ता नान्य पुरातनः। महाभारत, 2/346/65
4. श्रीमद्भागवतपुराण 5/9:13
5. आदिपुराण 24/33
6. शर्मा, सुरेन्द्र कुमार, हठयोग एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं हठयोगप्रदीपिका, पृ. 17

Scanned by CamScanner

***"श्री आदिनाथाय नमोस्तु तस्मै, येनोपदिष्टा हठयोग विद्या।
विभ्राजते प्रोन्नतराज योग, मारोढुमिच्छोरधिरोहिणीव ।।"***[7]

श्री आदिनाथ को नमस्कार हो। जिन्होंने उस हठयोग विद्या का, सर्वप्रथम उपदेश दिया, जोकि बहुत ऊँचे, राजयोग पर आरोहण करने के लिये, नसैनी के समान है। आदिनाथ 'ऋषभदेव' अथवा 'हिरण्यगर्भ' का ही अपर नाम है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रागैतिहासिक काल में योग की विभिन्न पद्धतियाँ साधना रूप में प्रचलित थीं। अतः भिन्न-भिन्न साम्प्रदायिकों ने अपने अपने मतानुसार अपने इष्टदेव को योग का आद्य प्रवर्तक मान लिया।

प्रो. प्राणनाथ विद्यालंकार न केवल सिन्धु घाटी के धर्म को जैन धर्म से सम्बंधित मानते हैं वरन् वहाँ से प्राप्त एक मुद्रा नं. 449 पर तो उन्होंने 'जिनेश्वरः' (जिन इस्सरः) शब्द भी अंकित रहा बताया है और जैन आम्नाय की 'श्री, ह्रीं क्लीं' आदि देवियों की मान्यता भी वहाँ रही बतायी है।

योगियों की परम्परा का प्रमाण हमें मोहन-जो-दड़ो की खुदाई से प्राप्त मुद्राओं में मिलता है। वहाँ कायोत्सर्ग मुद्रा में एक ध्यानावस्थित योगी की मोहर (seal) प्राप्त हुई है[8]। स्व. राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने इसे जैन तीर्थंकर की मूर्ति माना है। वे लिखते हैं - "मोहन-जो-दड़ो की खुदाई में प्राप्त मोहरों में से एक में योग के प्रमाण मिले हैं। एक मोहर में एक ओर वृषभ तथा दूसरी ओर ध्यानस्थ योगी हैं, जो जैन धर्म के आदि तीर्थंकर ऋषभदेव हैं। उनके साथ भी योग की परम्परा लिपटी हुई है (आजकल, मार्च, 1962, पृ. 8)।" इसके अतिरिक्त पटना के निकट लोहानोपुर से प्राप्त नग्न कायोत्सर्ग स्थित मूर्ति से भी इस बात की पुष्टि होती है[9]।

इतिहास गवाह है कि आज तक प्राचीन से प्राचीन और नई से नई जितनी भी जैन प्रतिमाएँ मिलती हैं वे योगी मुद्रा में ही मिलती हैं। या तो वे खड्गासन मुद्रा की हैं या फिर वे पद्मासन मुद्रा की हैं। खड्गासन में ही कायोत्सर्ग मुद्रा उसका एक विशिष्ट रूप है।

पम्मखडगासणा खलु काउसग्गासणो वीयरागस्स। पूरयकुम्भयरेचण पाणायाम-तवो देहेण ।।

वीतराग मुद्रा के तीन मुख्य आसन हैं पद्मासन, खड्गासन और कायोत्सर्गासन। पूरक, कुम्भक और रेचन - ये तीन प्रमुख प्राणायाम हैं। ये सभी शरीर के द्वारा किये जाने वाले तप हैं। नासाग्र दृष्टि और शुक्ल ध्यान की अंतिम अवस्था का साक्षात् रूप इन प्रतिमाओं में देखने को सहज ही मिलती है। इन परम योगी वीतरागी सौम्य मुद्रा के दर्शन कर प्रत्येक जीव परम शांति का अनुभव करता है और इसी प्रकार योगी बनकर आत्मानुभूति को प्राप्त करना चाहता है (जैन अ. क., 2008)।

वेदों में पूज्य ऋषभदेव :

ऋषभदेव को सिर्फ जैन परम्परा ही नहीं वरन् वैदिक परम्परा भी उनको शलाका पुरुष मानती है।

7. हठयोगप्रदीपिका, 1/1
8. Modern Review, August 1932, pp. 155-156
9. जैन साहित्य का इतिहास, पूर्वपीठिका, प्राक्कथन, पृष्ठ 10

Scanned by CamScanner

वेदों और पुराणों में उनके उल्लेख इसकी निश्चित तौर पर पुष्टि करते हैं और अनेकों साहित्यिक प्रमाण इस विषय में आज भी उपलब्ध हैं। ऋग्वेद व अथर्ववेद में ऐसे अनेक मन्त्र हैं, जिनमें ऋषभदेव की स्तुति अहिंसक, आत्मसाधकों में प्रथम, अवधूत चर्या के प्रणेता तथा मर्त्यों में सर्वप्रथम अमरत्व अथवा महादेवत्व पाने वाले महापुरुष के रूप में की गई है (रजनीकान्त शाह, 2011)। एक स्थान पर उन्हें ज्ञान का आगार तथा दुःखों व शत्रुओं का विध्वंसक बताते हुए कहा गया है -

"असूतपूर्वी वृषभो ज्यायनिभा अस्य शुरुधः सन्तिपूर्वीः।
दिवो न पाता विदथस्यधीभिः क्षत्रं राजाना प्रदिवोदधाथे।।" ***– ऋग्वेद, 5-38***

अर्थात् जिस प्रकार जल से भरा हुआ मेघ वर्षा का मुख्य स्रोत है और जो पृथ्वी की प्यास को बुझा देता है, उसी प्रकार पूर्वी अर्थात् ज्ञान के प्रतिपादक वृषभ महान हैं। उनका शासन वरद है। उनके शासन में ऋषि-परम्परा से प्राप्त पूर्व का ज्ञान आत्मा के क्रोधादि शत्रुओं का विध्वंसक हो। दोनों (संसारी और शुद्ध) आत्माएँ अपने ही आत्मगुणों में चमकती हैं; अतः वे ही राजा हैं, वे पूर्ण ज्ञान के आगार हैं और आत्म-पतन नहीं होने देते।

ऋग्वेद (2/34/2) के एक दूसरे मन्त्र में उपदेश और वाणी की पूजनीयता तथा शक्ति सम्पन्नता के साथ उन्हें मनुष्यों और देवों में पूर्वयावा माना गया है :

"मखस्य ते तीवषस्य प्रजूतिमियर्भि वाचमृताय भूषन्।
इन्द्र क्षितीमामास मानुषीणां विशां दैवी नामुत पूर्वयावा।।"

अर्थात् : हे आत्मदृष्टा प्रभो! परम सुख पाने के लिये मैं तेरी शरण में आता हूँ, क्योंकि तेरा उपदेश और वाणी पूज्य और शक्तिशाली हैं। उनको अब मैं धारण करता हूँ। हे प्रभो ! सभी मनुष्यों और देवों में तुम्हीं पहले पूर्वयावा (पूर्वगत् ज्ञान के प्रतिपादक) हो।

यजुर्वेद (अ. 31, मंत्र 8) में लिखा है -

वेदाहमेतं पुरूषं महान्तमादित्यवर्ण तमसः पुरस्तात्।
तमेव निदित्वाति मृत्युमेति नान्य पंथा विद्यतेऽयनाय।।

मैंने उस महापुरुष को जाना है, जो सूर्य के समान तेजस्वी, अज्ञानादि अन्धकार से दूर है। उसी को जानकर मृत्यु से पार हुआ जा सकता है, मुक्ति के लिए अन्य कोई मार्ग नहीं है।

'ॐ नमोऽर्हन्तो ऋषभो' (यजुर्वेद)

अर्थात् : अर्हन्त नाम वाले (वा) पूज्य ऋषभदेव को प्रणाम हो।

अथर्ववेद में ऋषभ को भवसागर से पार उतारने वाला कहकर उसकी स्तुति की गई है -

"अंहो मुचं वृषभं यज्ञियानां विराजन्तं प्रथममध्वरणाम्।
अपां न पातमश्विना हुवेधिय इन्द्रियेण तमिन्द्रियं।"

Scanned by CamScanner

पापों से मुक्त पूज्य देवताओं और सर्वश्रेष्ठ आत्मसाधकों में सर्वप्रथम भवसागर के पोतकों में हृदय से पुकारता हूँ। हे सहचर बन्धुओ! उस सर्वश्रेष्ठ वृषभ को तुम पूर्ण श्रद्धा द्वारा उसके आत्मबल और उसके तेज को धारण करो क्योंकि वह भवसमुद्र से पार उतारेगा[10]।

ऋग्वेद (4.58.3) में भगवान ऋषभदेव को अनन्तचतुष्टय का धारी प्रतिपादित किया है -

चत्वारी श्रृंगात्रयो अस्य पादा, दै शीर्ष सप्त हस्तासौ अस्य
त्रिधा बद्धो वृषभो शेरणीति, महादेवी मत्यनिविवेद।

अर्थ : ऋषभदेव के अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य रूप चार शृंग हैं। उनके सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र रूपी पद (चरण) हैं। उच्चवासन अर्थात् केवलज्ञान एवं मुक्ति रूपी दो शीर्ष हैं। सप्तभंगी रूप सात हाथ हैं। मन वचन कार्यरूपी तीन योगों से बंधकर जीव संसारी हो जाता है और इन तीनों का निरोधकर तपस्या कर यह आत्मा परमात्मा बन जाता है।

आगे पुनः स्तुति करते हुए कहते हैं :

'एवं वभ्रो वृषभ चेकिस्तान यथा हेक न हषीषन हन्ति।'

हे शुद्ध, दीप्तिमान सर्वज्ञ वृषभ ! हमारे ऊपर ऐसी कृपा करो कि हम जल्दी नष्ट न हों और न किसी को नष्ट करें।

भरत एवं बाहुबली द्वारा पिता का अनुसरण :

भगवान ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र महाराज भरत सभ्य संसार के प्रथम चक्रवर्ती सम्राट हुए। उन्हीं के नाम पर यह महादेश भारतवर्ष कहलाया, इस विषय में जैन एवं ब्राह्मणीय पौराणिक अनुश्रुतियां एकमत हैं (जैन ल. 1993)। इस संबंध में शिवपुराण और श्रीमद्भागवत में भी उल्लेख मिलता है :

नाभेः पुत्रश्च ऋषभः ऋषभाद् भरतोऽभवत्। तस्य नाम्ना त्विदं वर्षं भारतं चेति कीर्त्यते ॥

- शिवपुराण, अध्याय 37/57

येषां खलु महायोगी भरतो ज्येष्ठः श्रेष्ठगुण आसीत् येनेदं वर्षं भारतमिति व्यपदिशन्ति।

- श्रीमद्भागवत, पंचम स्कन्ध, अध्याय 4/9

भरत ने धर्मात्मा, सन्तोषी एवं ज्ञान-ध्यान रत व्यक्तियों को ब्राह्मण संज्ञा देकर चतुर्थ वर्ण की स्थापना की थी। भरत चक्रवर्ती की राजधानी अयोध्या ही थी। अन्त में राज्य त्यागकर उन्होंने भी अपने पिता तीर्थंकर के मार्ग का अनुसरण किया और मुक्ति प्राप्त की। उनके अनुज बाहुबली भी अद्भुत तपस्वी योगीराज हुए (जैन ज., 1975)। उन्होंने बारह मास का 'प्रतिमा योग' धारण किया है। इस ध्यानकाल में उन्होंने आत्मचिन्तन किया है, सत्य का शोधन किया है। आत्मा के उत्कर्ष की भूमि को प्राप्त कर ली है और कैवल्य की प्राप्ति की। श्रवणबेलगोला में हजार वर्ष से स्थापित 57 फुट ऊंची बाहुबली की प्रतिमा विश्वविख्यात है।

---

10. दत्तभोज/अथर्ववेद 19.42.4

Scanned by CamScanner

योग विद्या के जनक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने प्रागैतिहासिक काल में जो योग साधना का प्रवर्तन किया वह भगवान महावीर के समय तक अविछिन्न रूप से चलती रही। भगवान महावीर के प्रमुख शिष्य गौतम आदि ग्यारह गणधरों तक ने उस साधना पद्धति को प्रायोगिक रूप से जीवित रखा, फिर वह कुछ समय जम्बूस्वामी तक चलती रही, योग का मुख्य लक्ष्य मोक्ष प्राप्त होता रहा। काल के परिवर्तन के कारण पंचम काल में यह साधना प्रायोगिक रूप से कुछ अवरुद्ध हुई और साक्षात् मोक्ष की प्राप्ति असंभव हो गयी। किन्तु साधना का क्रम रुका नहीं। प्रथम शती में आचार्य कुन्दकुन्द ने पुनः जैन योग साधना और अध्यात्म की पुनः प्रतिष्ठा की और आत्मानुभूति का मार्ग प्रशस्त किया। इसके बाद अध्यात्म और साधना की संयुति चलती रही। छठी शती तक आचार्य पूज्यपाद ने इस अवधारणा को बनाये रखा। आठवीं शती में आचार्य हरिभद्र तथा आचार्य शुभचन्द्र ने, ग्यारहवीं शती में आचार्य हेमचन्द्र ने जैन योग की व्याख्या सुप्रसिद्ध आचार्य पतंजलि के परिप्रेक्ष्य में भी करना शुरू कर दी। जैन योग साधना पर आज तक जो ग्रन्थ लिखे गए हैं उनकी संख्या हजारों में है। अभी भी सैकड़ों ग्रन्थ शास्त्र भंडारों में पांडुलिपि के रूप में अपने उद्धार की प्रतीक्षा में भी बैठे हैं। इस विषय पर हमें निरंतर अनुसंधान करते रहने की आवश्यकता है।

इस प्रकार भारतीय संस्कृति को प्रथम योगीश्वर के रूप में भगवान ऋषभदेव का अवदान एकांगी न होकर सर्वांगीण और चतुर्मुखी है। भारतीय संस्कृति के आंतरिक पक्ष को जो योगदान उन्होंने दिया उसकी चर्चा संसार के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद इस शब्दों में करता है -

"त्रिधा बद्धोवृषभोरोरवीतिमहादेवोमर्त्यां आ विवेश"

इस मन्त्रांश का सीधा शब्दार्थ है तीन स्थानों से बंधे हुये वृषभ ने बारंबार घोषणा की कि महादेव मनुष्यों में ही प्रविष्ट हैं। यह घोषणा आत्मा को ही परमात्मा बनाने की घोषणा है। आत्मा में परमात्मा के दर्शन करने के लिए मन, वचन, काय- तीनों योगों से बद्ध (संयत) होना आवश्यक है। यह त्रिगुप्ति ही वृषभ का तीन स्थानों पर संयमित होना है।

संदर्भग्रंथ सूची :

- **आनंद, अरुणा** (2002). पातञ्जलयोग एवं जैनयोग में परस्पर साम्य-वैषम्य एवं वैशिष्ट्य. In अ. आनन्द, पातञ्जलयोग एवं जैनयोग का तुलनात्मक अध्ययन (प्रथम ed., pp. 264-265). दिल्ली: भोगीलाल लेहरचन्द इन्स्टिट्यूट ऑफ इण्डॉलाजी.
- **आत्मारामजी, आ. श.** (1983), जैन योगः सिद्धान्त और साधना. (श. अ. मुनि, Ed.) मानसा मन्डी (पंजाब) : आत्म ज्ञानपीठ.
- **जैन, अनेकान्त कुमार** (2008). जैन योग की समृद्ध परंपरा. In अ. क. जैन, जैनधर्म एक झलक (p. 61). मेरठ : श्रुत संवर्द्धन संस्थान.
- **जैन, ज्योति प्रसाद** (Ed.). (1975). भगवान महावीर स्मृति ग्रन्थ, लखनऊ : श्री शशिभूषण शरण सचिव, श्री महावीर निर्वाण समिति, उत्तरप्रदेश,
- **जैन, रामजीत** (2022, अक्टूबर-नवम्बर), जैन दर्शन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि. (अ. जैन, Ed.) अर्हत् वचन, 4, 77.

Scanned by CamScanner

- **जैन, फूलचन्द प्रेमी** (2017). श्रमण संस्कृति और वैदिक व्रात्य. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ.
- **जैन, लक्ष्मीचंद्र** (1993), अन्तर्द्वन्द्रों के पार गोम्मटेश्वर बाहुबली (द्वितीय ed.). नई दिल्लीः भारतीय ज्ञानपीठ.
- **जैन, अनेकान्त कुमार**, योगविद्या के प्रवर्तक हैं भगवान ऋषभदेव https://anekantkumarjain.blogspot.com/2023/03/blog-post_14.html/ Retrived from 02-10-2024
- **जैन, अनेकान्त कुमार**, जैन योगविद्या भारत की मूल परंपरा
- https://anekantkumarjain.blogspot.com/2021/06/blog-post_19.html/Retrived from 02-10-2024
- **शाह रजनीकान्त, देसाई कुमारपाल** (2011), अष्टापद महातीर्थ 01, न्यूयॉर्क : यूएसए जैन सेंटर अमरीका,

લેખક પરિચય : डॉ. अरिहंत कुमार जैन, के. जे. सोमैया धर्म अध्ययन संस्थान, सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय, मुंबई के जैन धर्म अध्ययन केंद्र में सहायक प्रोफेसर और मान्यता प्राप्त पीएच.डी. गाइड हैं। उन्होंने कोलंबो (श्रीलंका) में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जैन धर्म का प्रतिनिधित्व किया है और लगभग 25 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं

Scanned by CamScanner